संगीत नाटक समाचार

संगीत नाटक अकादेमी Sangeet Natak Akademi

अंक 11 ◆ जून – जुलाई 2007

अकादेमी अध्यक्ष की राष्ट्रपति से भेंट

भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल को 31 जुलाई 2007 को राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली में अकादेमी प्रकाशनों व उत्कृष्ट भारतीय संगीतकारों की कम्पैक्ट डिस्क (सीडीज़) का सेट भेंट करते हुए श्री रामनिवास मिर्धा, अध्यक्ष संगीत नाटक अकादेमी।

अकादेमी के पदाधिकारी

अध्यक्ष
श्री राम निवास मिर्धा

उपाध्यक्ष
श्री कावालम नारायण पनिक्कर

वित्तीय सलाहकार
श्री आर. सी. मिश्रा

सचिव
श्री जयंत कस्तुआर

सम्बोधन

संगीत नाटक अकादेमी ने 'युवा रंगकर्मी प्रोत्साहन योजना' के अन्तर्गत प्रशिक्षण कार्यक्रम आरम्भ किया जिसमें विभिन्न राज्यों में तीस दिवसीय कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं। तत्पश्चात् इन तीस दिवसीय कार्यशालाओं से चयनित प्रतिभागियों के लिए पचहत्तर दिवसीय कार्यशालाएं आयोजित होती हैं। अकादेमी द्वारा मार्च 2000 से अपनी प्रथम अग्रगामी योजना आरम्भ की गई तब से अब तक अकादेमी ने विभिन्न राज्यों में पन्द्रह कार्यशालाएं आयोजित की जिसमें 373 प्रतिभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इसी के साथ अकादेमी द्वारा दो गहन कार्यशालाओं (द्वितीय चरण) का आयोजन किया गया जिनमें 51 कलाकारों को प्रशिक्षित किया गया। प्रस्तुत अंक का आरम्भ छत्तीसगढ़ राज्य के खैरागढ़ में 3 जुलाई से 1 अगस्त, 2007 तक आयोजित पन्द्रहवीं कार्यशाला के संक्षिप्त वृत्तान्त से किया जा रहा है।

नृत्य प्रतिभा एक ऐसा नृत्योत्सव है जिसमें युवा प्रतिभाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाता है। अकादेमी द्वारा नृत्य के क्षेत्र में नई पीढ़ी के कलाकारों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से ही इस उत्सव का आयोजन किया जाता है। प्रतिभा कार्यक्रम केवल नृत्य तक ही सीमित नहीं है, अपितु इन वर्षों के दौरान युवा कलाकारों के लिए संगीत प्रतिभा एवं रंग प्रतिभा उत्सवों का आयोजन भी, देश के विभिन्न भागों में इसी श्रृंखला की कड़ी के रूप में किया जाता रहा है। देहरादून में उत्तरी भारत की युवा नृत्य प्रतिभाओं पर 21-24 जुलाई 2007 तक आयोजित नृत्य प्रतिभा कार्यक्रम की रिपोर्ट इस अंक में देखी जा सकती है।

अकादेमी ने अगस्त 2005 से भारत में प्रचलित संगठित पारम्परिक पुतुल कला के प्रदर्शनों की नई श्रृंखला आरम्भ की जिसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समग्र कला का मूल्यांकन कर वहां के क्षेत्रीय लोगों को इसके संवर्धन व प्रदर्शन के लिए उपयुक्त मंच उपलब्ध करवाना था। विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व कर रही पारम्परिक पुतुलों के अब तक नौ प्रदर्शन दिल्ली में आयोजित किये जा चुके हैं। इसी श्रृंखला में 27 जुलाई 2007 को रवीन्द्र भवन स्थित मेघदूत थियेटर–2 में महाराष्ट्र की पुतुल कालसूत्री बाहुल्य के प्रदर्शन का आयोजन किया गया। स्थायी स्तम्भों के साथ–साथ इस कार्यक्रम का विवरण भी प्रस्तुत किया जा रहा है।

जयंत कस्तुआर
सचिव

युवा रंगकर्मी कार्यशाला, खैरागढ़

छत्तीसगढ़ के युवा रंगकर्मियों को प्रोत्साहित करने के लिए अकादेमी द्वारा खैरागढ़ में 3 जुलाई से 1 अगस्त 2007 तक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का आयोजन इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय के सहयोग से किया गया तथा युवा रंगकर्मियों को प्रथम चरण का आरम्भिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में 21 से 35 वर्ष तक की आयु के उम्मीदवारों के साथ किये गये साक्षात्कार के आधार पर 23 युवा रंगकर्मियों का चयन किया गया जिनमें दो महिलायें थीं। साक्षात्कार में राज्य के विभिन्न भागों जैसे कि जसपुर, कोर्बा, राजनंदगाँव, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, विलासपुर, खैरागढ़ एवं जंजगिरि–चंपा से आये प्रतिभागियों ने भाग लिया।

प्रख्यात रंगमंच निर्देशक व अकादेमी पुरस्कार सम्मानित श्री सतीश आनन्द शिविर के निर्देशक थें। राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय नई दिल्ली के पूर्व छात्र श्री योगेन्द्र चौबे, स्थानीय संयोजक के रूप में उनकी सहायता कर रहे थें।

प्रख्यात रंगकर्मियों द्वारा रंगमंच के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया। संकाय सदस्यों में सतीश आनन्द, दिल्ली (अभिनयः ध्वनि एवं उच्चारण/नाट्य पाठन एवं विश्लेषण), योगेन्द्र चौबे, रायगढ़ (अभिनय), ज्ञानदेव सिंह, खैरागढ़ (योग एवं अंगसंचालन), प्रोबीर गुहा, कोलकाता (इम्प्रोवाइजेशन एवं अंग संचालन), पी. गोपीनाथ, तिरुवनन्तपुरम (कलरिपयट्टु), सुमन कुमार, दिल्ली (परिधान सज्जा व दृश्य सज्जा), लोकेन्द्र त्रिवेदी, दिल्ली (रंगमंच संगीत), मिर्जा मसूद, रायपुर (संरचनात्मक प्रलेखन), निरंजन गोस्वामी कोलकाता (मूक अभिनय), राजकमल नायक, रायपुर (काव्य–रंगमंच), ए. एन. राय, खैरागढ़ (रंगमंच प्रबन्धन), बद्री सिंह कथारिया, भोपाल (रूपसज्जा), दिनेश ठाकुर, मुम्बई (निर्माण प्रक्रिया), सुरेश भारद्वाज, दिल्ली (प्रकाश व्यवस्था), देवेन्द्र राज अंकुर, दिल्ली (विश्व रंगमंच पर एक समीक्षा और भारतीय रंगमंच व कहानी का रंगमंच – कथा प्ररूप में रंगमंच) एवं डा. ओमप्रकाश भारती, उपसचिव (नाटक), संगीत नाटक अकादेमी थे।

प्रतिभागियों को छत्तीसगढ़ की लोक परम्पराओं से अवगत कराने के लिए, विभिन्न क्षेत्रीय लोक नाट्यों का प्रदर्शन भी किया गया। इन प्रदर्शनों में दिलीप तारक, बलराम तारक एवं पार्टी द्वारा 'नाचा', नकुल यादव एवं पार्टी द्वारा 'बंस गीत', शांती देवार एवं पार्टी द्वारा 'देवार कर्मागीत' व नृत्य, पी. सी. लाल यादव एवं समूह द्वारा लोक संगीत तथा रामधर साहू एवं राकेश तिवारी द्वारा 'चंदायनी' की प्रस्तुति की गई। डॉ. कप्तान सिंह, डॉ. मांडवी सिंह, डॉ. आई. डी. तिवारी एवं डॉ. भारत पटेल ने योग, नृत्य, शेक्सपीयर के नाटकों एवं छत्तीसगढ़ के लोकगीत एवं नृत्यों पर विस्तृत व्याख्यान दिये।

प्रतिभागियों की सुविधा के लिए निम्नलिखित नाटकों की वीडियो सी.डी. प्रदर्शित की गयीं।

अन्वेषक (हिन्दी)
लेखकः प्रताप सहगल
निर्देशकः सतीश आनन्द

मृच्छकटिकम् (बिदेशिया शैली में)
लेखकः शूद्रक
निर्देशकः सतीश आनन्द

डाकू (हिन्दी)
लेखकः मुद्राराक्षस
निर्देशकः सतीश आनन्द

खुल जा सिम–सिम (हिन्दी)
लेखकः चन्द्रशेखर काम्बर
निर्देशकः बी.वी. करांत

तुगलक (हिन्दुस्तानी)
लेखकः गिरीश कर्नाड
निर्देशकः दिनेश ठाकुर

रानी देई (हिन्दी)
लेखकः नन्द किशोर तिवारी
निर्देशकः योगेन्द्र चौबे

इसके अतिरिक्त चार्ली चैपलिन की फिल्मों के कुछ दृश्य भी दिखाये गये।

अगस्त 1 को विदाई समारोह आयोजित किया गया। प्रोफेसर गीता पेंटल, कुलपति, इंदिरा कला विश्वविद्यालय, समारोह की मुख्य अतिथि थीं और उन्होंने प्रतिभागियों को प्रमाण–पत्र वितरित किये। राज्य के विभिन्न भागों से आये प्रख्यात रंगकर्मियों एवं कलाकारों के समक्ष कार्यशाला के निर्देशक श्री सतीश आनन्द ने कार्यशाला प्रतिवेदन पढ़ा। प्रतिभागियों द्वारा कार्यशाला में निर्मित नाट्य प्रस्तुति कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही।

ऊपरः रूपसज्जा का सत्र। नीचेः कलरिपयट्टु का अभ्यास करते हुए प्रतिभागी।

नृत्य प्रतिभा, देहरादून

संगीत नाटक अकादेमी ने देहरादून में 21–24 जुलाई 2007 तक रूरल इन्ट्रप्रेन्योरशिप एण्ड कल्चरल हेरिटेज व ऑयल एण्ड नेचुरल गैस कॉरपोरेशन के सहयोग से युवा नर्तकों के लिए नृत्य प्रतिभा उत्सव का आयोजन किया। उत्सव उत्तरी भारत की युवा नृत्य प्रतिभाओं पर केन्द्रित रहा। नर्तक जम्मू एवं कश्मीर, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तरांचल व दिल्ली से अपनी–अपनी कला प्रतिभाओं को प्रदर्शित करने के लिए आए। इस अखिल भारतीय उत्सव में नृत्य शैलियों को व्यापक प्रतिनिधित्व प्रदान करने के उद्देश्य से उक्त राज्यों के अतिरिक्त देश के अन्य भागों से भी कुछ नर्तकों को आमंत्रित किया गया। समारोह का उद्घाटन उत्तराखण्ड विधानसभा के अध्यक्ष श्री हरबंस लाल कपूर के कर कमलों से 21 जुलाई को आई.जी.एन.एफ.आर.ए. सभागार में सम्पन्न हुआ तथा उत्सव 22–24 जुलाई तक ए. एम.एन.घोष सभागार, देहरादून में चलता रहा। देहरादून के श्रोताओं ने उत्सव की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम

शनिवार, 21 जुलाई

सुमेलिका भट्टाचार्य, दिल्ली – ओडिसी

नम्रता राय एवं श्याम कार्तिक मिश्र, देहरादून – कथक

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट लेबोरेटरी, इम्फाल – पुंग चोलम

अर्चना तिवारी एवं कुमार गौरव शर्मा, लखनऊ – कथक

रविवार, 22 जुलाई

मंजुला, दिल्ली – मोहिनीआट्टम

सुजनीत कौर, जालंधर – कथक

अपराजिता शर्मा, दिल्ली – भरतनाट्यम

प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट लेबोरेटरी, इम्फाल – रासलीला

सोमवार, 23 जुलाई

रंगमण्डली, गुवाहाटी – गायन बायन

जॉली मोनी सैकिया एवं पंकज, गुवाहाटी – सत्रिय

अश्वथी के. कुमार, दिल्ली – कुचिपुडि

हिमाचल/जम्मू एवं कश्मीर – कथक

मंगलवार, 24 जुलाई

सुधा मलिक, गाजियाबाद – ओडिसी

पविथ्रा एवं एस. वासुदेवन, दिल्ली – भरतनाट्यम

शुभ्रा गल्होत्रा, कुरूक्षेत्र – कथक

अकादेमी के छऊ परियोजना कलाकारों द्वारा – छऊ (मयूरभंज)

दाएं: *अर्चना तिवारी एवं कुमार गौरव शर्मा – कथक*

विराषा – कथक

पविथ्रा एवं वासुदेवन – भरतनाट्यम

पारम्परिक पुतुल कला/ रंगमंच/वीडियो रिपोर्ट

दिल्ली में अकादेमी के पाक्षिक प्रदर्शन

कालसूत्री बाहुल्यः महाराष्ट्र की धागा पुतुल

कालसूत्री बाहुल्य, जिसका अर्थ धागे से चलने वाला पुतुल है, रामायण से राम के जन्म से रावण के वध तक की कथाएं प्रस्तुत करते हैं। पुतुल कलाकार अच्छे चित्र कथा वाचक भी होते हैं और महाकथाओं से कहानियां सुनाते हैं। गायक और इसके साथी संगीतज्ञ मंच के सामने बैठते हैं, गणेश के आह्वान के साथ प्रदर्शन आरम्भ होता है। इसमें तबला टुनटुन (एक तार वाला यंत्र), मंजीरा और शंख जैसे वाद्यों का प्रयोग किया जाता है।

यह पुतुल छोटे होते हैं जो लकड़ी के बने होते हैं। इनके पांव नहीं होते और इन्हें लम्बे लंहगे पहनाये जाते हैं। इसी परम्परा का एक पुतुल है जिसके जबड़े का संचालन किया जाता है। पुतुलों को एक डिब्बे के आकार जैसे मंच में से तीन धागे खींच कर चलाया जाता है। धागों का एक सिरा उनके हाथों से और दूसरा सिरा त्रिकोणीय नियंत्रण से जुड़ा होता है।

कालसूत्री बाहुल्य का प्रदर्शन 27 जुलाई 2007 को सायं 6.30 बजे नई दिल्ली स्थित मेघदूत थियेटर–2 में आयोजित किया गया। प्रदर्शन में लोक कला भवन पिंगुली समूह ने अहिरावण एवं महिरावण की कथा को प्रस्तुत किया। महाराष्ट्र के इस प्रख्यात समूह ने इस के पूर्व वर्ष 2003 में अकादेमी के स्वर्ण जयंती के अवसर पर अपना प्रदर्शन किया। तत्पश्चात् 2005 में मुम्बई में एवं 2006 में लखनऊ में अपना प्रदर्शन किया।

समूह के निर्देशक गणपत सखाराम मसागे स्वयं प्रख्यात पुतुलकार हैं जो महाराष्ट्र प्रान्त के सिंधुदुर्ग जिला स्थित पिंगुली में कालसूत्री बाहुल्य परम्परा के विकास में संलग्न पुतुलकारों के पारम्परिक घराने से संबंधित हैं। यह घराना इस कला की मौलिक शैली का लगभग 300 वर्षों से अनुसरण करता आ रहा है। गणपत सखाराम ने इस कला को अपने गुरू एवं पिता भीखाजी सखाराम मसागे से सीखा। महाराष्ट्र की पुतुलकला में सराहनीय योगदान के लिए इन्हें संगीत नाटक अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। प्रदर्शन में शिवदास के. गणपत मसागे ने तबला पर, एकनाथ पी. मसागे ने झंझा पर, सखाराम वी. मसागे ने टुन–टुन पर एवं पांडुरंग बी. सावंत ने झंझारी पर संगत दी। प्रकाश व्यवस्था की जिम्मेदारी दत्ता प्रसाद वी. रसानकुटे ने संभाली और साथ ही उन्होंने सागर बी. गंगावने एवं गणपत मसागे के साथ पुतुलों को परिचालित भी किया।

हिन्दी का उत्तरोत्तर प्रयोग

हिन्दी कार्यशालाः संसदीय राजभाषा समिति की सिफारिशों के अनुरूप अकादेमी हिन्दी की त्रैमासिक कार्यशालाओं को आयोजित करती है। इसी अनुक्रम में 25 से 26 जून 2007 तक दो दिवसीय हिन्दी कार्यशाला मेघदूत थियेटर–2 में आयोजित की गई। कार्यशाला का संचालन प्रो. गंगा प्रसाद विमल, प्राध्यापक जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने किया। अनुवाद–कला, टिप्पण, प्रारूपण, एवं शुद्ध वाक्य रचना इस कार्यशाला के मुख्य विषय थे। कार्यशाला में अकादेमी के 16 कर्मियों ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्देश्य कार्मिकों को कार्यालय के रोज़मर्रा के कार्यों को हिन्दी में करने के लिए प्रेरित करना था।

प्रलेखन

नृत्य प्रतिभा, 21 से 24 जुलाई, 2007 देहरादून। 8:00 घंटे वीडियो, 300 फोटोग्राफ्स।

स्मृति में

संगीत नाटक अकादेमी तथा इससे सम्बद्ध निकाय अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित श्री एस. वी. पार्थसारथी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

श्री एस. वी. पार्थसारथी का जन्म वर्ष 1917 में तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई में हुआ था। सन् 1930 के दशक में आपने कर्नाटक गायन संगीत का प्रशिक्षण सर्वश्री टी. एस. सबेसा अय्यर, के. पोन्नी पिल्लै, टाइगर के. वर्दाचारियार एवं कृष्णा अय्यंगर से प्राप्त किया तथा उसके बाद वीणा–वादन में पारंगता हासिल की। श्री पार्थसारथी ने वर्ष 1954 में अन्नामलाई विश्वविद्यालय में संगीत प्राध्यापक के रूप में अपने व्यावसायिक जीवन की शुरुआत की, परन्तु अपने व्यावसायिक जीवन का अधिकांश समय आप ऑल इंडिया रेडियो त्रिची में कर्नाटक एवं सुगम संगीत के निर्माता के रूप में कार्यरत रहे। 1985 में आपने अन्नामलाई यूनीवर्सिटी में पुनः संगीत प्रोफेसर के रूप में अध्यापन आरम्भ किया तत्पश्चात् 1988 में आप फाइन आर्ट्स विभाग के संकायाध्यक्ष नियुक्त हुए।

श्री पार्थसारथी 1930 के दशक में गायन संगीत के क्षेत्र में उतरे एवं शीघ्र ही सुगम संगीत व संगीत प्रसारक के रूप में स्वयं को प्रतिष्ठित किया। आपने ऑल इंडिया रेडियो में 20 वर्षों तक तिरुवैयारू में आयोजित होने वाले त्यागराज महोत्सव के प्रसारण के दायित्व का निर्वहन किया। श्री पार्थसारथी ने "द हिन्दू" में संगीत पर आलेख भी लिखे एवं अपने द्वारा गाये हुए गीतों का संकलन भी किया। आपकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए तमिलनाडु की विभिन्न सभाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

कर्नाटक संगीत गायन के क्षेत्र में योगदान के लिए वर्ष 2005 में श्री पार्थसारथी को अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री पार्थसारथी का 25 जुलाई 2007 को चेन्नई में देहावसान हो गया।

निजी परिचलन हेतु। प्रकाशक, सचिव, संगीत नाटक अकादेमी, रवीन्द्र भवन, फ़िरोज़शाह रोड, नई दिल्ली 110 001. फोनः 23387246/7/8. फैक्सः 23381621. ईमेलः sangeetnatak@bol.net.in. डिज़ाइन व प्रोडेक्शनः stetdelhi@gmail.com